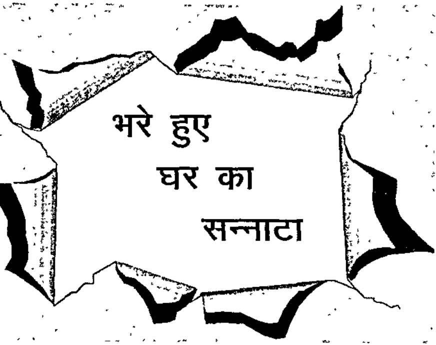
भरे हुए घर का सन्नाटा

(ग़ज़ल संग्रह)

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के
आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

नेगचार प्रकाशन, बीकानेर



अज़ीज़ आज़ाद

प्रकाशक : नेगचार प्रकाशन, 3 च-14, पवनपुरी, बीकानेर (राज.)/मुद्रक : साक्षरता सेवा सदन समिति, 2ई-29, पवनपुरी, बीकानेर/आवरण : शरद नागल/ संस्करण : 1998/ मूल्य : 80रु.

BHARE HUE GHAR KA SANNATA (Ghazals) by - AZIZ AZAD Rs. : 80/-
Published by : Negchar prakashan, 3 CH -14, Pawanpuri, Bikaner - 334003

दुनिया में तेरा कोई भी दुश्मन नही तो क्या
अपने ही मार देते है मिलकर कभी-कभी

अजीज आजाद

ज़िन्दगी का तर्जुमा है ग़ज़ल

पहले हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में ग़ज़ल का कोई खास स्थान नहीं था। इसकी पहचान केवल उर्दू के साथ ही जुड़ी हुई थी। लेकिन एक ऐसा वक्त आया जब आदरणीय श्री प्रकाश पंडित और श्री गोयली ने उर्दू के चुनींदा शायरों की ग़ज़लों को हिन्दी लिपि में छापकर जन-जन तक पहुंचा दिया। आज ग़ज़ल इतनी लोकप्रिय हो चुकी है कि हर आदमी इसे पसंद करने लगा है। अब यह किसी भाषा या वर्ग मात्र की ही पहचान नहीं है। इसका सम्बन्ध सीधा लोगों के दिलो से हो चुका है। अब तो ग़ज़ल कई जबानों में लिखी जाने लगी है। ग़ज़ल का जादू सिर चढ़कर बोलने लगा है। एक आम आदमी भी अपने दिल के उद्‌गार शे'रों के माध्यम से प्रकट करने लगा है। आपसी बातचीत या महफिलों में यह एक आम बात हो चुकी है।

ग़ज़ल अब केवल औरतों से बातचीत का फ़न ही नहीं है। इसका फलक बहुत बड़ा हो चुका है। ग़ज़ल लोगों के दर्द की ज़बान बन चुकी है। मानवीय सम्बन्धों के बीच पनप रहे जान लेवा सन्नाटे में ग़ज़ल एक ऐसी सदा है जो हमे हमारे जिन्दा होने का अहसास दिलाती है। भरे हुए घर का सन्नाटा जब आदमी के वजूद को निगलने लगता है और उसकी डूबती हुई चीखें पत्थरों से टकरा कर लौट आती हैं, तब ग़ज़ल उन लौटती हुई चीखो को एक सशक्त अभिव्यक्ति देती है। शब्दों की गुनगुनी आंच पाकर मौन मुखर हो उठता है।

दो उपन्यास, पचास कहानिया और कई कविताएं लिखीं, लेकिन मेरा मन ग़ज़लो में ही राहत पा सका। मुझे लगा कि मैं इसके माध्यम से अपने आप को ज्यादा अच्छे ढंग से अभिव्यक्त कर सकता हूं। मैं सादा जबान मे गहरी और असरदार बात कहना चाहता हूं जो एक मुश्किल फ़न है। मेरे पहले गजल सग्रह 'उम्र बस नींद-सी' को पढ़ने के बाद आपने जो मेरा हौसला बढाया यह उसी का परिणाम है कि 'भरे हुए घर का सन्नाटा' आपके सामने है। इसके माध्यम से मैं इन्सानो के बीच पनपाई जा रही नफरत और मानवीय मूल्य के हो रहे हनन के खिलाफ लोगो को जागरूक करना चाहता हूं।

यह तो सही है कि गज़ल फारसी और उर्दू भाषा की लोकप्रिय विधा रही है। लेकिन हिन्दी भाषा ने इसे बड़े सम्मान के साथ अपनाया है। अमीर खुसरो और मलिक मुहम्मद जायसी के कलाम को हिन्दी भाषा की धरोहर के रूप मे माना जाता है। लेकिन आजकल मैं कई अदीबों को भाषा के नाम पर नाक-भौं सिकोडते देखता हूँ। रचना हिन्दी भाषा में लिखी हुई हो तो उर्दू वाले कहेगे - यह तो हिन्दी का कवि है। उर्दू मे लिखी हो तो हिन्दी वाले परहेज बरतने लगते हैं। मैं इसे तगनजरी और साम्प्रदायिक सोच मानता हूँ।

आज बड़े-बड़े उर्दू के शायर अपना कलाम हिन्दी मे ही छापना पसंद करते हैं। हिन्दी वाले भी अपनी रचनाओं मे उर्दू के शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से कर रहे हैं। फिर क्यूं लोग बेकार के तर्क देकर फिजूल की बहस खड़ी करने की कोशिश कर रहे हैं। बहस का मुद्दा यह क्यूं है कि हम किस भाषा में लिख रहे हैं। मुद्दा तो यह होना चाहिए कि जिसे हम ग़ज़ल कह कर लिख रहे हैं वो ग़ज़ल है या नहीं। उसकी जबान, तहजीब, सलीका और उसके तेवर बरकरार हैं या नहीं। हिन्दी और उर्दू ग़ज़ल का फर्क समझाने की दलीलें अब मुझे बेतुकी लगती हैं। अब ग़ज़ल हिन्दुस्तान की उपजाऊ जमीन में पैदा होने वाला वो खूबसूरत फूल है जिसमें दोनो भाषाओ की महक शामिल है। अब ग़ज़ल को समझने का रिवायती नज़रिया बदला जाना चाहिए। ग़ज़ल तो अब हमारी हिन्दगी का तर्जुमान (अनुवाद) है।

मैंने अपनी ग़ज़लें अखिल भारतीय स्तर के कवि सम्मेलनों और मुशायरे में भी सुनाई है और स्थानीय तथा ग्रामीण स्तर के सर्वभाषी कवि सम्मेलनों मे भी। लोगो ने इन्हें बडे सम्मान के साथ सुना और पसंद किया है। ग़ज़ल के इस असर ने ही मेरे लिखने के उत्साह को बनाए रखा है। सम्प्रेषण की समस्या कहीं भी नजर नहीं आई।

मेरे मित्र कई दिनों से यह चाह रहे थे कि अब मेरा एक ग़जल संग्रह शीघ्र निकलना चाहिए, लेकिन विपरीत परिस्थितियो के कारण लिखने का मानस नही बन पा रहा था। अगर आज यह पुस्तक आपके हाथो मे आई है। तो यह भाई डॉ नन्द किशोर आचार्य की प्रेरणा का ही असर है। उन्होंने ही मेरे सोये हुए मानस को जगाया और मुझे निरन्तर प्रोत्साहित करते रहे। इनके साथ मुझे प्रोत्साहित करने वालो मे उर्दू अदब की एक अज़ीम हस्ती भाई शीन. काफ. निज़ाम भी है, जिन्होने मुझे भरपूर अपनत्व के साथ अदब की दुनिया मे अपनी पहचान कायम करने के नायाब मौके भी दिये। साथ ही मै शुक्रिया अदा करना चाहूगा जनाब मखमूर सईदी, मो इब्राहिम 'गाजी' जैसे बुजुर्ग शायरो का जिन्होने हमेशा मेरी हौसला अफजाई की है।

मै धन्यवाद दूंगा प्रतिभाशाली युवा लेखक मालचन्द तिवारी को जिसने इस पुस्तक की प्रकाशन व्यवस्था की रूचि से देख-रेख की। मैं आभारी हू भाई मक्खन जोशी, गोपाल जोशी, श्रीलाल मोहता, अरविन्द ओझा और मेरे शहर के तमाम रचनाधर्मी दोस्तो का जिनके प्यार और प्रोत्साहन ने मुझे परवान चढाया। अन्त मे धन्यवाद देना चाहूगा राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर को जिसके द्वारा मुझे इस पुस्तक के प्रकाशन हेतु आंशिक आर्थिक सहयोग मिला।

-अज़ीज आजाद

अनुक्रम

1

तुझको पाने की ख्वाहिश में कहां कहां से गुज़रा मैं
उस दिन पहली बार मिला तू जिस दिन खुद में उतरा मैं

खंडहर हो जाने का मंज़र मैंनें खुद में देखा है
रफ़्ता-रफ़्ता टूटा हूं मैं रेज़ा-रेज़ा बिखरा मैं

ये भी कैसी आग है जिसमें जलकर मैं सरसब्ज हुआ
जैसे-जैसे झुलसा उसमें वैसे-वैसे निखरा मैं

मेरे होने से ही तुम हो अब इसको तसलीम करो
एक समन्दर मुझसे ही है माना कि हूं क़तरा मैं

मैं तो था इक बांस का टुकड़ा साज़ कहां आवाज़ कहां
उन होठों की छुअन मिली तो सुर बनकर यूं बिखरा मै

किसे पता था एक मुसाफिर खुद मंज़िल बन जायेगा
ये तो तब एहसास हुआ जब तेरी नज़र में उभरा मै

भरे हुए घर का सन्नाटा और भी गहरा लगता है
ऐसे में इक धूप का टुकड़ा कितना अच्छा लगता है

पल-पल जिसको मैंने अपना लहू पिला कर पाला था
अब वो हरियल पेड़ हुआ तो कितना ऊंचा लगता है

सुब्ह-सुब्ह जब मेरा बेटा काम ढूंढने निकला था
शाम को जब वो घर लौटा तो कितना बूढ़ा लगता है

सुलग गया सांसों का जंगल रेत हेत की खुश्क हुई
इस बस्ती में आंगन-आंगन सहरा-सहरा लगता है

वो जो खुद को बांट चुका है इतने रिश्ते नातों में
उम्र ढली तो वो अपनों में कितना तन्हा लगता है

देते हैं लोग हक भी तो खैरात की तरह
खुद मांगते हैं जान भी सौगात की तरह

फिरते हैं चाहतों का बियाबां लिए हुए
हम कैद हैं खुद ही में हवालात की तरह

ये ज़िन्दगी भी ज़हर के प्याले सी हो गई
पीते रहे हैं हम जिसे सुकरात की तरह

हम खुद भी इक सवाल हैं देंगे भी क्या जवाब
मिलिए न हमसे आप सवालात की तरह

सुलझे हुए ख़्याल किताबों में रह गये
उलझे हैं हम तो आज के हालात की तरह

रखते हैं कैसे लोग परिंदों को क़ैद मे
होते हैं ये भी आप के जज़्बात की तरह

4

लब तरसने लगे हैं हंसी के लिए
कैसी लानत है ये इस सदी के लिए

आदमी आदमी से रहे अजनबी
लोग ज़िन्दा है फिर किस ख़ुशी के लिए

हर सुबह है सिसकती हुई शाम सी
रूह बेचैन है रोशनी के लिए

अब तो सूरज निकलता है जैसे कोई
ग़मज़दा चल दिया ख़ुदकशी के लिए

ऐसी दुनियां में जीना ही है गर हमें
प्यार लाज़िम है इस जिन्दगी के लिए

हम मुहब्बत के क़ाबिल नही ना सही
इक बहाना सही दिल्लगी के लिए

5

तेरी आंखों में शर्म बाकी है
इस ज़माने में इतना काफी है

कितने सामां है दिलनवाज़ी के
फिर भी माहौल मे उदासी है

वो मुझे मांगता है अब मुझसे
मैने हर सांस बेच डाली है

ज़िन्दगी खुद ही इक तलातुम है
बड़ी मुश्किल से रास आती है

देख कर अब चलन ज़माने का
बेहयाई भी मुस्कराती है

तू हकीकत मे है खरा मोती
तेरी मुस्कान ये बताती है

अब इसे अलविदा कहो यारों
ये सदी तो लहू की प्यासी है

6

प्यार की इक किरन जिन्दगी दे गई
मैं महकने लगा वो खुशी दे गई

प्यार बन के बरसने लगी तिश्नगी
दर्द की आंच तो आशिकी दे गई

एक सूखी नदी का किनारा था मैं
लहर आई मुझे ताज़गी दे गई

कोई शिकवा करूं भी तो किससे करू
तेरी चाहत मुझे बेबसी दे गई

मेरी रग-रग में बजने लगी राग सी
याद तेरी मुझे बांसुरी दे गई

मेरी आँखों में जो ये पानी है
वो तेरे प्यार की निशानी है

इश्क आसां नहीं ज़माने में
दिल जलाना है चोट खानी है

जब्त करना सिखा दिया मुझको
ये तेरी मुझपे मेहरबानी है

तू ही लैला हुआ तू ही मजनूं
बाकी किस्सा है या कहानी है

इसको उम्रों से नापने वालो
इश्क जावेद जिस्म फानी है

वहशी नही हूं मै न कोई बदहवास हूं
महसूस कर मुझे कि मैं सहरा की प्यास हूं

मेरे ग़मो की धूप ने झुलसा दिया मुझे
मुझ को हवा न दीजिए सूखी कपास हूं

तुम ना मिटा सकोगे मेरी रूह को कभी
अपने वजूद का मै फ़कत इक लिबास हूं

मै हू तेरे ख्याल मे अशआर की तरह
मुझ को खुदी में ढूंढ मै तेरे ही पास हूं

मेरे बगैर तू भी कहां जी सका अज़ीज
तेरे बगैर मै भी यकीनन उदास हूं

9

ये कोई मोतबर सा लगता है
इसलिए बेअसर सा लगता है

आज मुझपे वो मेहरबां क्यूं है
मुझको रह रह के डर सा लगता है

हर परिंदा लहू में तर लौटा
ये भी मौसम क़हर सा लगता है

काट डालेगे लोग इसको भी
अब ये पौधा शजर सा लगता है

हर कोई बदगुमां है अपनों से
ये ठिकाना भी घर सा लगता है

अजनबी को भी प्यार देता है
ये भी मेरे शहर सा लगता है

आपकी रहबरी में चलना भी
एक अंधे सफ़र सा लगता है

जो खुद का बोझ पावों पे उठा नहीं सकता
मतलब कभी थकान का समझा नहीं सकता

घायल के लिए जख़्म ज़रूरी तो नहीं है
जो है उसे वो आपको दिखला नहीं सकता

पंछी की हर उड़ान का मक़्सद ज़रूर है
पिंजरे में रहते वो तुम्हें समझा नहीं सकता

लम्बा है आसमान से दिलों का फासला
कोई भी नाप के इसे बतला नहीं सकता

जो खुद उलझ के रह गया अपने ख़्याल में
वो फिर किसी सवाल को सुलझा नही सकता

मुजरिम है तू भी वक्त का तस्लीम कर अज़ीज
तू सच को इस तरह से तो झुठला नही सकता

॥

अपना सफ़र भी दोस्तो ये कैसा सफ़र है
मंज़िल का पता है न हमें घर की ख़बर है

हम तो बदल रहे हैं बदलती हवा के साथ
अपनी कोई पहचान है न कोई असर है

हम को निगल न जाए कहीं अपनी बुज़दिली
दुश्मन से कहीं ज़्यादा हमें अपना ही डर है

न वो सकून, न वो ख़ुशी, न वो राहतें
ख़ानाबदोश लोग हैं अपना कहां घर है

रिश्तों का जो एहसास था अब वो भी मर गया
दामन हमारा अपनों के ही ख़ून से तर है

12

जो तू नहीं तो कोई हमसफर तो होगा ही
हां सायबान नहीं है शजर तो होगा ही

चली गई है शराफत तो अलविदा कह कर
चलें शहर में कोई मोतबर तो होगा ही

गुनाहगार हूं दोज़ख़ कबूल है मुझको
चलो कहीं भी सही उसका घर तो होगा ही

मेरे नसीब से ज्यादा तू मुझको क्या देगा
तेरे बग़ैर भी आख़िर गुजर तो होगा ही

तुम्हारा काम है तुम तो लगा के दूर हुए
मगर यह आग है इसका असर तो होगा ही

वो जब भी मिला राह मे फैला हुआ मिला
उसके जो आसपास था सहमा हुआ मिला

हैरान हू कि जब भी जहां देखता हू मैं
चेहरा उसी का हर जगह चिपका हुआ मिला

हर मोड़ हर मकाम पर उसका ही शोर है
हर कोई उसका नाम ही लेता हुआ मिला

गुज़रा है जब भी शहर की सड़कों से वो कभी
हर मील का पत्थर मुझे झुकता हुआ मिला

छोटे है मेरे शहर के मीनार किस कदर
वो आ गया तो हर कोई बौना हुआ मिला

आप जब भी अम्न का ऐलान करते हैं
क्यूं उसी दिन शहर में कुछ लोग मरते हैं

आप तो सुख बांटने निकले हैं बस्ती में
लोग फिर क्यूं आपके साये से डरते हैं

जिधर से आप गुज़रे हैं जो अपना काफ़िला लेकर
वहा क्यूं प्रार्थनाएं शान्ति की लोग करते हैं

वतन को है कोई ख़तरा तो वो तुमसे ही ख़तरा है
हमारे रहनुमाओ हम तो अब तुम से ही डरते हैं

सियासत क्या फ़कत करती है पैदा सांप जहरीले
वहीं दो-चार होते हैं जहां हम पांव धरते हैं

15

आप चिन्तित हैं केवल सुमन के लिए
आज ख़तरा है पूरे चमन के लिए

कोई आए तो आए कहां से यहां
रास्ता ही नहीं जब पवन के लिए

आदमी बन गया है लपट आग की
रक्त देना पड़ेगा शमन के लिए

प्रेम का जब भी बनता है वातावरण
आ गये लोग क्यूं विषवमन के लिए

प्रार्थनाएं सभी व्यर्थ होने लगीं
शान्ति चाहिए पहले मन के लिए

हर तरफ आजकल पाप का राज है
कोई आता नही क्यूं दमन के लिए

जो रहे झूठ की हिमायत में
क्या मिलेगा उन्हें इबादत मे

जितने मुज़रिम थे वो सभी अब तो
आ गये आजकल सियायत में

शहर का शहर जल गया पल में
लोग मशगूल थे शरारत में

कैसे मुमकिन है ये कि बच जाए
जो रहे आपकी हिफ़ाजत में

मुझ को रह रह के डर सा लगता है
क्या छुपा है तेरी इनायत में

ये ना समझो कि लोग बुज़दिल है
जब्त करते है बस शराफत मे

17

पूजने का ये सिला हासिल हुआ
जो मसीहा था वो ही क़ातिल हुआ

सरपरस्तो ने ही लूटा घर मेरा
दुश्मनों में दोस्त भी शामिल हुआ

दर्द, सदमे, जख्म सब सहता रहा
तब कही मै प्यार के काबिल हुआ

अब तो पाने की हवस ही प्यार है
जिस्म ही बस आखरी मंज़िल हुआ

फूंक डाला घर किसी मजलूम का
ये बता कि क्या तुझे हासिल हुआ

प्यार जिसने पा लिया इस दौर मे
बस उसी को ही खुदा हासिल हुआ

जहां ग़म का निशां नही होता
ऐसा कोई जहां नहीं होता

जिनके पांवों तले ज़मीन नहीं
सिर पे भी आसमां नहीं होता

खुद से मिलना अजीब रिश्ता है
बीच में गर जहां नहीं होता

खुद को जो आज़मा नही सकते
उनको अपना गुमां नहीं होता

मिलने वाला जो दिल से मिलता है
फिर कोई दरम्यां नहीं होता

प्यार होता ना गर ज़माने मे
कोई दिलकश समां नहीं होता

ये दिलों के खौफ़ जिस दिन भी हवा हो जाएंगे
आप अपने आप के खुद रहनुमा हो जाएंगे

हौसला कायम रहा तो रहबरो की क्या ग़रज
पांव खुद ही रास्तों के आशना हो जाएंगे

साजिशें पलने लगी हैं गुम्बदों की छाव मे
बह गये जज़्बात में तो हम जुदा हो जाएगे

रहजनो के साथ रह कर मंजिलों की ख़्वाहिशें
रोक लो इन सिरफिरो को गुमशुदा हो जाएंगे

ज़िन्दगी की कुछ हदे हैं और आगे मत बढो
पार वो भी कर गये तो लापता हो जाएगे

20

धूप से गर बचे छांव में जल गये
उम्र ढलने से पहले ही हम ढल गये

मंज़िलों का हमें कुछ पता ही नहीं
बेसबब हम कहां से कहां चल गये

जो भी आये है बन के मसीहा यहां
अपनी चारागरी से हमें छल गये

आप हैरान है हम मरे क्यूं नहीं
सिर्फ वादों पे हम किस तरह पल गये

और लोगों ने धोखे से लूटा मगर
आप हमदर्दियों से हमें छल गये

21

क़दम-क़दम पर मौत का ख़तरा जुल्म अभी तक जारी है
यह आजादी पा कर हमने ख़ुशी कौनसी पा ली है

लोग रोटियां सेक रहे हैं इन्सानों की लाशों पर
मतलब ही मज़हब है उनका काबा है न काशी है

रहन रख दिया आज वतन को मिल कर कुछ अय्याशों ने
हमने अपनी उम्र चुका दी कर्ज़ अभी तक बाकी है

अब ये गज़ले किसे सुनाएं कहां अदब की बात करें
चोली के पीछे जाकर जब सोच यहां रुक जाती है

वो ही है कानून यहां का जो करते हैं बात हुजूर
चाहे जिसको दे सकते हैं बिन खेले ही मात हुजूर

सच का आखिर मोल ही क्या है इस सच मे क्या रखा है
आज झूठ के कब्जे में है पूरी कायनात हुजूर

जिनकी आदत हाथ फैलाना जो कर्जे पे पलते हैं
वो क्या बोले आप के आगे उनकी क्या औकात हुजूर

अपना सबकुछ सौंप चुके हैं हुक्म की ताबेदारी है
ये सांसे जो हम लेते हैं आपकी है सौग़ात हुजूर

बिके हुओ की मर्जी कैसी दबे हुओं की कहां बिसात
आप्र कहें तो दिन कह देंगे आप कहें तो रात हुजूर

बस इतना सा ध्यान में रखना हवा बदलती रहती है
चलते चलते वक्त अचानक कर जाता है घात हुजूर

23

सख़्त मुश्किल की घड़ी है कुछ करो
मौत सिर पे आ खड़ी है कुछ करो

उम्र से लम्बे है पसरे रास्ते
बेड़ियां पावों पड़ी हैं कुछ करो

दहशतों ने डस लिए हैं हौसले
हर तरफ इक हड़बड़ी है कुछ करो

अम्न उनको नापसंद है आजकल
नीयतों में गड़बड़ी है कुछ करो

एक इज्जत ही तो अपने पास है
वो भी खतरे में पडी है कुछ करो

साहिल है कोसों दूर हवा का दबाव है
उतरेंगे पार किस तरह काग़ज़ की नाव है

वो जो वतन की नाव डुबोने पे तुल गये
पतवार उनको सौप दी कैसा बचाव है

कुछ हादसों ने देश की मुस्कान छीन ली
मायूसियों का आजकल घर-घर पड़ाव है

क़ायम रहेगा किस तरह अम्नो-अमां यहां
हरदम कही फ़साद कहीं पर चुनाव है

उनको तो रोज़ खून बहाने का शौक है
हमको भी अपने आप से गहरा लगाव है

काबिज है हर मकाम पर अब तो वतनफरोश
मतलब परस्त लोगों का भारी जमाव है

हर शख्स अपने आप मे उलझा हुआ सा है
आंखें बुझी हुई हैं रगों में तनाव है

25

बड़ा अजीब सा मजर दिखाई देता है
हर एक हाथ मे पत्थर दिखाई देता है

लहू से अपने शहीदो ने जिसको सींचा था
आज वो खेत ही बजर दिखाई देता है

किसी गरीब से अब उसका हाल मत पूछो
हर एक दिन उसे अजगर दिखाई देता है

खुदा का नाम भी लेता हुआ मै डरता हूं
मुझे लहू का समन्दर दिखाई देता है

अभी इस राह से किसका जुलूस गुज़रा है
सभी के चेहरों पे इक डर दिखाई देता है

मैं जब भी शहर मे मुजरिम तलाश करता हू
मुझे वो मेरे ही अन्दर दिखाई देता है

लूट, कांड और अपराधों की खान हो गया हिन्दुस्तान
फिर भी हम ख़ामोश हैं कितना महान हो गया हिन्दुस्तान

नेता तो नासूर हो गये आज देश की छाती पर
चन्द सियासी सेठो की दूकान हो गया हिन्दुस्तान

राम के घर में इतने रावण ये कैसा बदलाव हुआ
सत्य, अहिंसा, प्रेम से क्यूं अनजान हो गया हिन्दुस्तान

हमने जिन के हाथों सौंपा वो ही मिल कर लूट गये
जैसे किसी सूने घर का सामान हो गया हिन्दुस्तान

बोलने वाले चुप बैठे हैं सन्नाटा हर ओर हुआ
यूं लगता है जैसे कि सुनसान हो गया हिन्दुस्तान

एक आवारा नदी में जैसे तिनके का सफर
इस तरह कुछ हो रही है ज़िन्दगी अपनी बसर

रुख बदलती इन हवाओं में उड़े पत्तों-से हम
हम से मत पूछो कहां होगी हमारी रहगुजर

हाथ थामे चल रहे हैं आपका ऐ रहबरो
हम तो नाबीने है हमको ले चलो चाहे जिधर

ओस से भीगी सुब्ह में हम सुलगते ही रहे
हर घड़ी अपने लिए है चिलचिलाती दोपहर

मोम के पुतलों पे जैसे धूप पड़ती है 'अज़ीज़'
इस तरह क्यूं पड़ रही है आपकी हम पे नज़र

अब तो अरमान जो दिल मे है निकाले जाए
ज़िन्दा रहना है तो कुछ वहम भी पाले जाएं

मोम का जिस्म लिए आग पे चलने वालो
अब इरादे ज़रा फौलाद मे ढाले जाएं

जंग लाज़िम है तो इस बार जरा जम के लड़ो
किसी सूरत में भी हथियार ना डाले जाएं

रोज़ यूं खौफ के साये में सिसकते लोगो
मोर्चे अब के दिलेरी से संभाले जाएं

ये बड़ी तल्ख़ उदासी का सफर है यारो
इसमें अलगाव के मुद्दे न उछाले जाएं

यहां से दर्द का खामोश समन्दर ले जा
प्यार की प्यास तेरी रूह के अन्दर ले जा

प्यार बन-बन के बरसती है दुआ देती है
तू भी कुछ ख़ाके-वतन जिस्म पे मल कर ले जा

देख आंखों में बुजर्गों की हया है अब भी
इसे इन लोगों की सौग़ात समझ कर ले जा

याद अपनों की सताती है सफर मे अक्सर
अपनी आंखों में छुपा कर कोई मंजर ले जा

ऐसे मौसम में परिंदे जो वतन छोड़ गये
उनकी यादों में संजोये हुए कुछ पर ले जा

30

हम जिन्हे अपना निगहबान बनाने निकले
वो ही क़ातिल वो ही मक्कार पुराने निकले

जिनसे बचने का जतन हम जो किया करते थे
आज तो साप हमारे ही सिरहाने निकले

अब तो इस दौर में दुश्मन की जरूरत क्या है
खून जब अपने ही अपनों का बहाने निकले

कल जो खुद आग लगाने में रहे है शामिल
आज वो लोग ही बस्ती को बचाने निकले

न्याय, कानून, पुलिस और वो जुर्मों की सजा
सिर्फ हमको ही डराने के बहाने निकले

जो कटा अपनी ज़मीं से लापता हो जायेगा
मिट गई पहचान ही तो क्या बचा रह जायेगा

कौन किसको याद रखता है भला इस दौर में
तू भी कल गुज़रा हुआ इक हादसा हो जायेगा

इस तरह न हंस कि हंसना बेहयाई सी लगे
हंसते-हंसते रो दिया तो बावला हो जायेगा

जुल्म ढा कर यूं न इतराओ किसी मजलूम पर
छिड़ गया वो गर किसी दिन ज़लज़ला हो जायेगा

आज जब रहबर ही मिलकर रहज़नी करने लगे
एक दिन ये काफ़िला भी गुमशुदा हो जायेगा

इस तरह चलती रही गर नफरतों की आंधियां
क्या पता फिर कौन किस से कब जुदा हो जायेगा

हमको ना दो यूं घने ग़म के साए
कहीं हौसलों की उम्र बढ़ ना जाए

न यूं आग बांटो जरा ये भी सोचो
लपट में तुम्हारा भी घर जल ना जाए

बड़ी खुरदरी है हकीक़त की धरती
अभी तुम हो ख्वावों की दुनिया बसाए

जब भी चले तुम तो पावों के नीचे
हमारे सिरों के ही ज़ीने बनाए

क़दम दो क़दम भी चले कब अकेले
हमीं ले चले हैं उठाए-उठाए

सोचो हमें यूं मिटाने से पहले
तुम्हे फिर ज़रूरत कभी पेश आए

हर क़दम पर हादसा दर हादसा
मंज़िलों से क्या हमारा वास्ता

ज़िन्दगी रंगीनियों में खो गई
याद आता ही कहां है अब ख़ुदा

बात सच की ही करेंगे लोग अब
हर घड़ी लेकर सहारा झूठ का

जो चले थे मंज़िलों की चाह में
वो सभी अब हो चुके हैं लापता

प्यार, रिश्ते, दोस्ती सब खेल है
आदमी इस दौर में है गुमशुदा

आदमी शैतान बन कर रह गया
कब रुकेगा नफरतों का सिलसिला

हम तो लफ्फ़ाज है अलफ़ाज़ लुटा सकते है
झूठ को चाहे तो हम सच भी बना सकते है

सिर्फ इक चाय की प्याली से ही गरमा के बदन
घंटो माहौल में तूफान उठा सकते है

अपनी जेबों में भी लेबल है कई रंगो के
जिसको चाहें उसे माथे पे लगा सकते हैं

कोई शादी, कोई मातम, किसी नेता की सभा
जैसा मौका हो वही गीत सुना सकते हैं

कितनी बातें हैं कि जिनका न कोई सिर ना सिरा
बहस की रौ में ही इक उम्र बिता सकते हैं

हम हक़ीकत में तुम्हें कुछ भी नहीं दे सकते
सिर्फ लफ्जो का तमाशा ही दिखा सकते हैं

ये सभी सच है पर इतना भी कोई कम तो नहीं
तुमको हालात की तस्वीर बता सकते हैं

35

मिट्टी के बदन कितने ही सांचों में ढल गये
सूखे हुए पत्तों की तरह लोग जल गये

इतनी हिफ़ाज़तों के कवच पहन कर भी लोग
पल भर में मोम की तरह कैसे पिघल गये

अपनी नज़र पे नाज़ था जिनको बहुत मगर
मौका पड़ा तो वो सभी नजरें बदल गये

आकाश बन के देखने वालो यह क्या हुआ
क़तरे जो लग रहे थे समन्दर निगल गये

दुनिया में आज वो ही सलामत हैं दोस्तो
जो लोग अपने आप से आगे निकल गये

चन्द मतलब परस्त लोगों का कोई रिश्ता या घर नही होता
जो पयम्बर को मार देते है उनमें अल्लाह का डर नहीं होता

अपने बच्चो को पालने वाले जिस्म तक उनका बेच खाते हैं
वरना अपने ही फल निगल जाए ऐसा कोई शजर नहीं होता

कर गये कूच वो सभी जिनका अपना कोई ज़मीर होता था
अब तो मुर्दापरस्त फिरते हैं जिनका कोई असर नही होता

जो शराफत की बात करते हैं उनका जीना भी आज दूभर है
ताज़पोशी उन्हीं की करते हैं जिनके कांधों पे सिर नहीं होता

37

वो कौन है जिनका कोई अरमान नहीं है
गर है भी कोई ऐसा तो इन्सान नहीं है

आलिम हुए, अदीब हुए, फ़लसफ़ी हुए
लेकिन उन्हें इन्सान की पहचान नहीं है

जिन्दा है ऐसे लोग भी दुनिया में दोस्तो
जिनका कहीं भी कोई निगहबान नहीं है

जब गीत लाज बेच कर मुजरों में ढल गये
अच्छे बुरे की अब कोई पहचान नहीं है

जो बांटते हैं ज़हर यूं मज़हब के नाम पर
उनका कोई अल्लाह कोई भगवान नहीं है

अब तो इस जुल्म को जड़ से ही मिटाया जाए
अपने गुलशन को दरिन्दों से बचाया जाए

आग नफ़रत की चमन को ही जला दे ना कहीं
अब लहू से ही सही इसको बुझाया जाए

जहर रग-रग में पसर जाए उसी से पहले
जो भी उगले उसे मिट्टी में मिलाया जाए

फिर वही प्यार का माहौल बनाने के लिए
अपना सोया हुआ एहसास जगाया जाए

जान दे के भी बचा लेंगे वतन को लेकिन
पहले इन्सान की गैरत को बचाया जाए

तुम को जीना है तो फिर शान से मरना सीखो
चाहे कट जाए मगर सिर ना झुकाया जाए

न जाने कब दिन ढलता है बस्ती में
पता वक्त का कब चलता है बस्ती में

सपनों के सैलाब उमडते रहते हैं
चाहों का मेला लगता है बस्ती में

बिकने को तैयार है सब चौराहो पर
हर कोई पर कब बिकता है बस्ती मे

मिलकर भी सब तन्हा-तन्हा लगते हैं
रिश्तों का जंगल उगता है बस्ती में

हर कोई बस भाग रहा है जल्दी में
न जाने वो क्या रखा है बस्ती मे

एक फ़कत ईमान नहीं चल पायेगा
बाकी तो सब कुछ चलता है बस्ती में

जगह-जगह इक खुसर-पुसर की जाजम है
वक्त बडा अच्छा कटता है बस्ती मे

चलो ये तो सलीका है बुरे को बुरा मत कहिए
मगर उनकी तो ये ज़िद है कि अब हमको ख़ुदा कहिए

किसी की जान ले लेना तो उनका शौक है यारो
जिसे तुम क़त्ल कहते हो उसे उनकी अदा कहिए

अजी इस दौर में हम तो न जाने कब के मर जाते
अगर ज़िन्दा है किस्मत से बुजर्गों की दुआ कहिए

तुम्हीं पे नाज़ था हमको वतन के मोतबर लोगो
तुम्हीं खामोश बैठे हो तुम्हे अब क्या हुआ कहिए

सलीकेमंद लोगों पर यूं ओछे वार करते हो
निहायत बदतमीज़ी है इसे मत हौसला कहिए

वो जो खुद को राहबर कहता रहा
सारे रस्ते पीठ पर बैठा रहा

अब भला लंगड़े को अंधा क्या कहे
वो जिधर कहता उधर चलता रहा

यह सफर तय किस तरह हो पायेगा
हर क़दम पर बस यही खटका रहा

एक मुद्दत हो गई चलते हुए
ठोकरें खा कर भी मैं हंसता रहा

मैं उसे फेंकूं तो आखिर किस तरह
मुझसे मेरी ज़ीस्त सा लिपटा रहा

कैसी मजबूरी थी मै खामोश था
दिल मेरा हरदम मगर जलता रहा

सिर पे हमारे एक खुला आसमान है
इन परकटों को आज भी कैसा गुमान है

कुछ लोग तो अब हमको मिटाने पे तुल गये
ये और बात है कि खुदा मेहरबान है

कुछ हादिसों के खौफ़ से सहमे हुए हैं लोग
हर एक शख़्स की यहां खतरे में जान है

जिसमें न ग़म, न प्यार, न अरमान है कोई
वो दिल ही क्या हुआ कोई खाली मकान है

अब तो निकल पड़े हैं मोहब्बत के नाम पर
सिर पे कफन बंधा है हथेली पे जान है

मिलने को तो हम मिल गये दीवार तोड़ कर
क्यूं फ़ासला अब भी हमारे दरमियान है

रोज दुनिया में फ़ित्तने जगाते रहो
फूट डालो हुकूमत चलाते रहो

सारी ताक़त तुम्हारे ही हाथों में है
यूं ही ज़ुल्मों के जंगल उगाते रहो

यह गुलामी ही शायद पसंद है हमें
बस यूं ही उंगलियों पे नचाते रहो

अम्न जब भी हो क़ायम मेरे देश में
आग नफरत की आ कर लगाते रहो

आज सब कुछ तुम्हारे ही हाथों में है
बस लपेटो, समेटो, दबाते रहो

लोग सौ रंग बदलते हैं लुभाने के लिए
कितने होते हैं जतन एक बहाने के लिए

राह रुक जाती है जिस्मों की हदों तक जाकर
फिर मोहब्बत का सफर खत्म जमाने के लिए

चंद लम्हों में किया चाहेंगे बरसों का हिसाब
किसको फुरसत है यहां साथ निभाने के लिए

प्यार करते हैं छुपाते हैं गुनाहों की तरह
कौन तैयार है इल्जाम उठाने के लिए

कैसे मुमकिन है कि हर मोड़ पे मिल जाएं अज़ीज़
ज़िन्दगी कम है जिन्हें अपना बनाने के लिए

अच्छा है कि आग लगा दें रोज के इन अखबारों को
जो अब हीरो बना रहे हैं अपराधी मक्कारों को

जिन लोगों की करतूतो से आज वतन शर्मिन्दा है
लोग सिरों पे बिठा रहे हैं उन घटिया किरदारों को

कश्ती को खतरे में डाला खुद ही खेवनहारों ने
लोगों ने बदनाम किया है बेमतलब पतवारों को

लोग कुल्हाड़ी मार रहे हैं खुद ही अपने पांवों पर
गुलशन का मुख़तार बना कर फूलों के हत्यारों को

उनके सिर पर राजमुकुट है जो घोषित अपराधी हैं
जीने के लाले पड़ते हैं अब तो इज्जतदारों को

तुमने हर दौर के सूरज का लहू चाटा है
अब तो आकाश मे भी ज़ख्म नजर आता है

एक तपते हुए सहरा की तरह फैल गये
जिस्म तो जिस्म है साया भी झुलस जाता है

किस सलीके से मिटा देते हो लोगों के निशां
जैसे बिस्तर से कोई सलवटें मिटाता है

कैसी दहशत है कि अपनी भी सांस ऐसे लगे
जैसे सीने पे कोई सांप सरसराता है

ऐसे बच्चे को भला नींद कहां आयेगी
थपकियां दे के जिसे भेड़िया सुलाता है

जिस्म सारा घाव सा लगने लगा है
खून में सुलगाव सा लगने लगा है

आंच से इन्कार करते हो करो
आदमी अलाव सा लगने लगा है

क्या हुआ कि अब तो सारे मुल्क में
हर तरफ तनाव सा लगने लगा है

हम वही, रिश्ते वही हैं, दिल वही
फिर भी क्यूं अलगाव सा लगने लगा है

अब हिफाजत का कोई भी इन्तज़ाम
कागज़ी इक नाव सा लगने लगा है

हम तो तुम्हारे सामने लाशों की तरह है
हां खेल तेरे हाथ मे पासों की तरह हैं

सौंपा तुझे वजूद तो शिकवा ही क्या करें
हम जिस्म नहीं तेरे लिबासो की तरह है

तू एक ही बिजली की तरह कौंध रही है
हम लोग तो जुगनूं के उजासों की तरह है

ता-उम्र तेरी याद में जलते हुए चिराग़
अब रात की उखड़ी हुई सांसो की तरह हैं

तरसे हैं इक नज़र को भी रह कर तेरे करीब
हम बदनसीब भी उन्हीं प्यासों की तरह हैं

नाखुदा बन के लोग आते हैं
खुद किनारों पे डूब जाते हैं

दो क़दम साथ जो निभा नं सके
ख्वाब सदियों के क्यूं दिखाते हैं

खुद की हालत है रहम के काबिल
मुझ से हमदर्दियां जताते हैं

प्यार का नाम ले के होठों पर
क्यूं तमाशा इसे बनाते हैं

लोग रिश्ते बना के जन्मों के
कच्चे धागों से टूट जाते हैं

मै तो उनकी भी लाज रख लूंगा
उंगलियां मुझपे जो उठाते हैं

जान लेता है जान क्या देगा
तू कोई इम्तहान क्या देगा

बेच डाला ज़मीर ही जिसने
दर्द को वो ज़बान क्या देगा

वो जो अपने लिए ही जीता है
तेरी हालत पे ध्यान क्या देगा

जो कफन तक भी छीन लेता है
वो मुझे सायबान क्या देगा

ग़म दिया ये तेरी इनायत है
और फिर मेहरबान क्या देगा

उम्र तो कट गई सलाखों मे
अब हमें आसमान क्या देगा

आ के दुनिया में हम लापता हो गये
जैसे इन्सां नहीं हैं हवा हो गये

सिर्फ रूहें भटकती रहीं शहर में
जिस्म जैसे कि हम से जुदा हो गये

हम को मांगा गया था दुआ मांग कर
हम मिले हैं तो जैसे सज़ा हो गये

जिनको मंज़िल मिली ही नहीं उम्र भर
हम ख़लाओं में भटकी सदा हो गये

लोग हमको तमाशा बनाते रहे
हम क्या थे यहां और क्या हो गये

तुम ज़रा प्यार की राहों से गुज़र कर देखो
अपनें जीनों से सड़क पर भी उतर कर देखो

धूप सूरज की भी लगती है दुआओं की तरह
अपने मुर्दार ज़मीरों से उभर कर देखो

तुम हो खंजर भी तो सीने में समा लेंगे तुम्हें
पर ज़रा प्यार से बाहों में तो भर कर देखो

मेरा दावा है कि सब ज़हर उतर जायेगा
तुम मेरे शहर में दो दिन तो ठहर कर देखो

कौन कहता है कि तुम प्यार के क़ाबिल ही नहीं
अपने अन्दर से भी थोड़ा संवर कर देखो

हुक्काम ही मुज़रिम हो फिर किसका गिला करना
ये देश है खतरे में मालिक से दुआ करना

अब अम्न के वो चर्चे तहजीव की वो बातें
ऐ भटकी हुई नस्लों किस्सों में सुना करना

अब लाल नहीं होते मौसम है दलालों का
हर चीज का सौदा है मक्सद है नफ़ा करना

तुम जिनके लिए अपना यूं खून बहाते हो
वो लोग तो फ़ितने है, फितरत है दगा करना

गर ये ही मुहाफिज है इस मुल्क की अजमत के
दुश्मन से नहीं यारो अब इनसे बचा करना

लोग सिजदा कर रहे हैं सिरफिरों के सामने
किस तरह बेबस पड़े हैं कमतरों के सामने

सच तो है दुबका इस दौर में कुछ इस तरह
जैसे हो खरगोश कोई अजगरों के सामने

शान्ति का वो कबूतर गोलियों की ज़द में है
जल रहा है देश पूरा रहबरों के सामने

तंगनज़री देखिये इस दौर के इन्सान की
अब अदब पिटने लगा है मसखरों के सामने

आजकल तो महफिलों को इक तमाशा चाहिए
मर्सिया पढ़ते ही क्यों हो पत्थरो के सामने

तीलियों के पुल बनाते ही रहे हर बार हम
डूब जाने की शिकायत क्यूं करें फिर यार हम

ताश के पत्तों को दीवारें समझ फौलाद की
इन हवाओं में बनाते जा रहे घरबार हम

सख्त चट्टानें भी पानी सी पिघल कर बह गई
मोम के पुतलों से क्यूं डरते रहे बेकार हम

जिस ज़मीं पे पांव रखा वो ही निकली खोखली
ज़िन्दगी भर ढूंढते ही रह गये आधार हम

कल भी हम बिछते रहे हैं चारपाई की तरह
आज भी उनका उठाए फिर रहे हैं भार हम

मंज़िल के तलबगारों सफर क्यूं नहीं करते
इन पावों को राहें है जिधर क्यूं नहीं करते

रहबर तलाशना ही जरूरी तो नहीं है
इनके बगैर आप गुज़र क्यूं नहीं करते

तरसी हुई आंखों से फलक़ देख रहे हो
कुछ अपने परों पर भी नज़र क्यूं नहीं करते

क्यूं अपने घरों में ही छुपे कांप रहे हो
क्या खौफ है पत्थर का जिगर क्यूं नहीं करते

तुम जोश मे पत्थर तो बहुत फेंक चुके हो
समझो भी कि आखिर ये असर क्यूं नहीं करते

सांस-सांस में ज़हर घुला है ख़ौफ दिलों पे तारी है
सुलगा-सुलगा सा सन्नाटा आवाजों पे भारी है

शाख-शाख पर ज़ख्म टंगे हैं ख़ून के जैसी शबनम है
बस्ती-बस्ती, आंगन-आंगन जंग मुसलसल जारी है

मन मरघट सा सूना-सूना सुख के सपने टूट गये
तन्हाई के इस आलम में जीना कितना भारी है

सहम गये बेबाक परिंदे बच्चे हंसना भूल गये
मुर्झाए मांओं के चेहरे ये कैसी लाचारी है

ज़िन्दा रहने की मजबूरी ले आई किस ठोर हमें
क़दम-क़दम पे मौत का साया क़दम-क़दम दुश्वारी है

हम रोज शिकायत के अलफ़ाज़ उगलते है
क़िरदार के मुद्दे पर कमज़ोर निकलते हैं

हुक्काम से समझौता दावा है बग़ावत का
दस्तूरे वफादारी हम खूब समझते है

जब-जब भी तलाशे हैं बरगद ही तलाशे है
है ज़हन मे ठंडापन जज़्बात सुलगते है

झरने के तले बैठे टीलो का भरम लेकर
है आग की अगुवाई साये में झुलसते हैं

न सच की तरफदारी न झूठ का शिकवा है
मुंह देख के लोगों का हर बात उगलते है

मुजरे की अदा लेकर सरकार से शिकवा है
गजरे की तरह हमको कुछ लोग मसलते है

अब जिनका है नाम मुहाफ़िज़ अजगर जैसे लगते हैं
दहशत के मारे लोगों को इनके साये डसते हैं

ऐसा अगर चमन है बोलो कैसे उस पर नाज़ करें
जहां परिन्दे चोंच में अपनी तिनके लेकर फिरते हैं

जंगल हो तो मान भी जाएं पर बस्ती का क्या कहिए
बगलों में आईन दबाए कितने गिरगिट मिलते हैं

भरी भीड़ में लुटे मुसाफिर कोई गवाह तैयार नहीं
क्या नाबीने ही नाबीने इस बस्ती में बसते हैं

चिनगारी ने हवा के बल पर आग लगा दी घर-घर में
अपना काम शुरू है यारो आओ लाशें गिनते हैं

खून तो खून है खुद अपनी गवाही देगा
ये बहेगा तो असर अपना दिखा ही देगा

यह न समझो कि सभी कुछ है तुम्हारे बस में
वक़्त बदला तो कभी वहम मिटा ही देगा

खुद से कट कर तो अंधेरों में भटक जाओगे
यह ज़माना जो ज़माना है भुला ही देगा

अपने होने के इस अहसास को ज़िन्दा रखिए
ये ही अहसास वजूदों की गवाही देगा

बुग्ज वो ज़हर है सब कुछ ही मिटा देता है
यह बढ़ेगा तो ज़माने को तबाही देगा

हर शख़्स अपने आप से बेज़ार बहुत है
लेकिन सभी को ज़िन्दगी से प्यार बहुत है

हां मौत का हर मोड़ पे आसान है मिलना
जीना ही फकत आज तो दुश्वार बहुत है

इतने पयम्बरों के मज़हब हैं ज़मीन पर
ये आदमी तो आज भी बदकार बहुत है

देखे हैं कहां तुमने तलातुम के थपेड़े
मौजों को जोश आया तो दो चार बहुत हैं

इस दौर में अब कौन किताबों को पढ़ेगा
पढ़ने के लिए रोज़ का अखबार बहुत है

लिखने को तो लिख दी है कई मैंने ग़ज़लें
अच्छा लगे तो एक ही अशआर बहुत है

उक्ताए जिस्मों पे अपने थकन ओढ़ कर आए हैं
एक कुली की तरह न जाने कितना बोझ उठाए हैं

घर आने की अकुलाहट थी आये तो आभास हुआ
हम परदेसी फ़कत यहां पर रात बिताने आए हैं

इच्छाओं की चादर उसने फैला दी है आंगन में
हम तो लेकिन सारी खुशियां बस मुट्ठी भर लाए हैं

इस दर्पण का पानी उतरे एक ज़माना बीत गया
सूरत नज़र नहीं आयेगी फिर भी ध्यान लगाए हैं

तुमने जो देखा है वो तो कुछ रंगों की परतें हैं
इन परतों के पीछे हमने कितने दाग़ छुपाए हैं

इस आंगन की तुलसी जिसका पत्ता-पत्ता टूट गया
एक है सूखा पेड़ कि जिस पे सारे आस लगाए हैं

63

पर नोच परिन्दों को परवाज़ की दावत है
यह कैसी नवाजिश है यह कैसी सखावत है

कुछ गौर करो यारो शब्दों की शरारत पर
साजिश तो नहीं जिसका अब नाम सियासत है

ज़ख्मों की मसीहाई नाखून किए जाएं
यह कैसा मदावा है यह कैसी हिफाज़त है

इस दौरे हवादिस में क्या चीज़ है जीना भी
हर रूह में बेचैनी, हर सांस अलामत है

तेवर के बदलते ही आंखें न चली जाएं
कमज़ोर की पलकों का उठाना भी बगावत है

64

तू क्या जाने तेरे खातिर कितने धोखे खाए हैं
हम तो तेरे शहर में आकर यार बहुत पछताए हैं

इस अनजानी भीड़ में आकर अपना सबकुछ भूल गये
किस से मिलते इस बस्ती में सारे लोग पराए हैं

आते जाते इन सड़कों पर सब मौसम मर जाते हैं
हम सुख की चाहत में अपना गांव छोड़ कर आए हैं

कब होती है सुबह सुहानी कब सूरज ढल जाता है
दो रोटी की चिन्ता में ही सारा जन्म गवाए हैं

हम परदेसी, लोग पराये, कहीं प्यार का नाम नहीं
किस जंगल मे आखिर हम भी उम्र बिताने आए हैं

दरवाजे पे दस्तक दी तो घर-आंगन सब कांप गये
ना जाने किस ख़ौफ से सारे घर वाले घबराए हैं

देखें हैं हमने ऐसे भी मंजर कभी-कभी
रहबर ही निगल जाते हैं लश्कर कभी-कभी

दुनिया में तेरा कोई भी दुश्मन नहीं तो क्या
अपने ही मार देते हैं मिल कर कभी-कभी

इन वादियों में आप सदाएं तो दीजिये
सुनते हैं बोल जाते हैं पत्थर कभी-कभी

मुमकिन है मेरे क़त्ल का कोई गवाह न हो
पर मुंह से बोल जाते हैं ख़ंजर कभी-कभी

अपनी नज़र के जाविए बदलो जरा अज़ीज़
क़तरे दिखाई देंगे समन्दर कभी-कभी

66

आंखों से अपनी झूठ का पर्दा हटाइए
इन्सान हो के खुद को खुदा मत बनाइए

ये वक्त तुम को घोल के पी जाएगा इक दिन
तूफान इस ज़मीं पे न ऐसे उठाइए

साजिश तो अपना रंग बदलती है बार-बार
हर बार उस से आप यूं धोखा न खाइए

मेहनतकशों का खून ही ताकत है वतन की
ये खून चन्द भेड़ियों को मत पिलाइए

क्या दोगे जब वतन को ज़रूरत पड़ी कभी
आपस में लड़ के अपना लहू मत बहाइए

दुनिया मे एक ये ही तो जन्नत है दोस्तो
नफरत की आग से न जहन्नुम बनाइए

67

अब तो कुछ बदलाव का नक्शा उभरना चाहिए
कुछ नई राहों से हमको भी गुजरना चाहिए

क्यूं उन्हीं लाशों को ढोते जा रहे हो बार-बार
कुछ नये चेहरों की अब तो खोज करना चाहिए

मुद्दतों से कुर्सियों पर जो चिपक कर रह गये
उन पुराने चींचड़ों को अब उतरना चाहिए

जो हिलाए दुम वतन के दुश्मनों के सामने
इस तरह के बुज़दिलों को डूब मरना चाहिए

तुम नहीं बदले तो इक दिन हम बदल देंगे तुम्हें
बेवकूफो वक्त के तेवर समझना चाहिए

हौसलों के पर जला देते हैं लोग
क्यूं उमंगों को मिटा देते हैं लोग

खुद को ज़िन्दा रखें इसके लिए
दूसरों के सिर कटा देते हैं लोग

साजिशों के सांप संन्यासी हुए
क़ातिलों को रब बना देते हैं लोग

अब गरीबों की भला औकात क्या
जब खुदा का घर जला देते है लोग

अपने आंगन के बबूलों के लिए
भेंट फूलों की चढ़ा देते हैं लोग

मेरा वजूद भी क्या है तुम्हें बताऊंगा
जिस्म की कैद से जिस दिन भी निकल जाऊंगा

मुझे नज़र की हदों में समेटने वालो
ये कितनी तंग हदें हैं तुम्हें बताऊंगा

मैंने धुएं की लकीरों का भरम देख लिया
अब के आया तो हवा बन के करीब आऊंगा

ऐसी सांसें जो सवालों से बिंधी रहती हैं
उन्हें हयात का मकसद नहीं बनाऊंगा

जिस्म की मौत जो होती है अभी हो जाए
मैं तेरा अक्स हूं अदना नहीं कहाऊंगा

हम लोग तो खुद अपने ही सायों से डर गये
शायद हमारे आजकल एहसास मर गये

क्या सोच के हम मुर्दा ज़मीरों के वास्ते
कुछ लोग अपने आप को क़ुर्बान कर गये

अम्न की सब कोशिशें बेकार हो गईं
वो कौन थे जो नफ़रतों का ज़हर भर गये

अब तो हवा में किस तरह दहशत सी घुल गई
बच्चे खुद अपनी माओं के चेहरो से डर गये

ठंडी हवा भी मौत का पैग़ाम बन गई
शाख़ो से टूट कर कई पत्ते बिखर गये



अज़ीज़ आज़ाद

☐ जन्म : 21 मार्च, 1944

☐ शिक्षा : एम. ए. (इतिहास)

☐ प्रकाशित कृतियां :

टूटे हुए लोग (उपन्यास)

उम्र बस नींद-सी (ग़ज़ल सग्रह)

महापुरुषों की जीवनियां

☐ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं व संग्रहों मे कई ग़ज़लें, कविताएं व कहानियां प्रकाशित

☐ आकाशवाणी और दूरदर्शन से प्रसारित

☐ सम्प्रति : व्याख्याता, राजकीय सादुल सी. उ. मा. वि., बीकानेर

☐ सम्पर्क : मोहल्ला चूनगरान, बीकानेर